स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्याशाखा के अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन

शोधछात्र

खुरेशी लायकपाशा महेबूबसाब

मार्गदर्शक

प्रोफेसर डाॅ. बी.एस. भुक्तरे

स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष,

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

जि. लातुर 413517

जुलाई 2021

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन

अनुक्रमणिका

अ.क्र. शाीर्षक पृष्ठ

1 भूमिका

2 अनुसंधान का उद्येश्य

3 अनुसंधान की पध्दतियाॅ

4 अनुसंधान कार्य

पहला अध्याय -तुलनात्मक अध्ययन:अवधारणा,स्वरूप

दूसरा अध्याय-तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास की तुलना

तीसरा अध्याय-तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास में सांप्रदायिकता

चैथा अध्याय-तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास में राजनितिक प्रभाव

पाॅचवा अध्याय-तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास मंे देशविभाजन की त्रासदी

छठा अध्याय- तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन

निष्कर्ष

5 अनुसंधान की उपयोगिता

6 उपलब्धियाॅ

7 अनुसंधान की व्याप्ती और सीमाएॅ

8 मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

9 संदर्भ ग्रंथ सूची

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन

भूमिका:-

तुलनात्मक शब्द अंग्रेजी के कम्पेअर का अनुवाद है। तुलनात्मक अध्ययनका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। जैसे - ज्ञान का विकास, शोध प्रविधि,भाषा,व्याकरण आदि के क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। भाषा का ज्ञान प्राप्त करना तुलनात्मक अध्ययन से ही संभव है। तुलनात्मक साहित्य एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन है।

तुलनात्मक साहित्य मात्र साम्य-वैषम्य प्रदान रनेवाली, तुलना भर नहीं है। यह तो साहित्य विशेष को पृष्ठभूमि प्रदान करनेवाली सामूहिक प्रवृतियों को संधान व्दारा मानवीय कार्यकलाप के अन्य क्षेत्रों के पारस्पारिक संबंध से बवगत भी कराती है। तुलनात्मक अध्ययनों के व्दारा ऐसी विशेषताएॅ उजागर होती है जो सामान्य अध्ययन से संभव नहीं होती । इससे नवीन संदर्भ नवीन रूप से प्रगट होते है। इससे भाषा और साहित्य का गहन संबध स्थापित होता है। इसके व्दारा मशीनी ट्रांसलेशन में सहायता मिलती है। तुलनात्मक अध्ययन से पारस्पारिक आदान-प्रदान व्दारा भाषाओं और साहित्य के क्षितिज विस्तृत होते है। यह अध्ययन पध्दति पूर्वाग्रहों से मुक्ति दिलाता है।

तुलना के बिना अनुसंधान पूर्ण नहीं हो पाता। तुलनात्मक अनुसंधान व्दारा कृति का सत्यान्वेशण करके निष्कर्षाे तक पहुॅचा जा सकता है। तुलनात्मक अध्ययन मनुष्य के विचारों,भावों और सामाजिक चेतना का दर्पण है। साहित्य के सम्यक अनुशीलन में तुलनात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। तुलनात्मक अध्ययन व्यक्तित्व की मानसिक प्रक्रिया सामाजिक,राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर प्रकाश डालता है।

आज भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता है। अपने देश की संस्कृति तथा वैचारिक पक्ष के साथ अन्य देश की संस्कृति का तादात्म होगा। अनुवाद के व्दारा ही भारतीय भाषा में शेक्सपीअर,बर्नाड शाॅ,गोर्की का साहित्य तुलनात्मक अध्ययन से ही संभव होता है। अनुवाद के व्दारा ही तुलनात्मक अध्ययन संभव सहजता से उपलब्ध होगा। तुलना करने से ही अन्य भाषा के साहित्य की पहचान हो सकती है। एक भाषा से अन्य दूसरी भाषा मे तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सकता है। तुलनात्मक अध्ययन वह मानवीय क्रियाकलापों को अन्य क्षेत्रों से अवगत कराती है। भाषा और साहित्य का पारस्पारिक संबंध स्थापित करने का वह एक महत्वपूर्ण पध्दति मानी जाती है।

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन करते समय केवल दोनों उपन्यासों के साम्य वैषम्य को ढूंढना नहीं बल्कि दोंनों उपन्यासों में व्यक्त विषय वस्तु का अध्ययन करना। दोनांे उपन्यासों की

समीक्षा करना भी है। तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यासों की विषयवस्तु समान रही है। फिर भी दोंनों में कुछ विषमता भी दिखाई देती है। स्थल,काल को लेकर भी दोनों उपन्यासों में भिन्नता दिखाई देती है।

तमस भीष्म साहनी का 1974 में प्रकाशित एक ऐसा उपन्यास है,जो पाठकों को भारत-पाक विभाजन के समय के सांप्रदायिक भीषण संग्राम का दर्शन कराता है। उपन्यास में एक छोटी सी घटना को लेकर हिंदू और मुसलमानों में आग का फैलाव हो जाता है। मुराद अली,नत्थु चमार व्दारा एक सूअर मरवाकर मस्जिद में में डलवाते है। परिमातः मुस्लिमों की भावनाए उत्तेजीत होकर हिंदूओं के खिलाफ नफरत की आग उगलने लगती है। विरोध में हिंदू भी ऐसे ही व्यवहार से पेश आते है। दूसरी तरफ जिना साहब की पाकिस्तान की मांग बढने लगती है, जिसमें अंग्रेजों की फूटनीति आग मेें घी डालने का काम करती है। अंग्रेज प्रशासन मुस्लिमों को उनका देश आजाद करने के लिए सपोेर्ट करते है। मुस्लिमों का कांग्रेस से विश्वास उड जाता है। वे मुस्लिम लीग के सहारे अलग पाकिस्तान निर्माण में लगे है। ‘ ‘कांग्रेस हिंदुओं की जमात है,इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं।’ ’ (तमस,पृ. 32)

उपन्यास के कुछ पात्र बख्शी,मेहता,जनरैल आदि कौमी नफरत को दूर करने का प्रयास करते है। परंतु दोनों कौमों में कुछ कटर धर्मांद लोग साम्प्रदायिता की भावना को खाद-पानी देते रहते है। जैसे- देवव्रत,रणवीर,वानप्रस्थी आदि। हिंदूुओं को मुस्लिमों के विरोध में भडकाते है। परिमाणमतः दो धर्मो में नफरत की भावना अलगाव का रूप धारण कर एक-दूसरे पर प्रहार करने के लिए मजबूर करती है। संपूर्ण उपन्यास में इन्ही सांप्रदायिक वारदातांे का लेखा जोखा है, जो तत्कालीन समय की यथास्थिती को दर्शाती है।

कितने पाकिस्तान कमलेश्वर व्दारा 2000 मंे प्रकाशित उपन्यास है। जो उपन्यास के ढांचे को तोडकर एक नए प्रयोग की कलाकृती सिध्द हुई है। लगातार दस वर्षो तक के लेखन से बनी यह रचना इतिहास एवं दस्तावेजों से हर समय की समस्याओं का सर्वांगपूर्ण विवेचन करती हैै। विभाजन,राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद,विश्व साम्प्रदायिकता तथा दुनिया के रक्तरंजित खूनखराबे की दहशतभरी दर्दनाक कहानी बयां करती है। प्रस्तुत उपन्यास मेें घटनाक्रम एवं इतिहास की उन तमाम समस्याओं को उठाया गया है,जो बुनियादी रूप में तत्कालीन समाज की समय≤ की मांग थी। इतिहास का सहारा लेकर कमलेश्वर ने उन समस्याओं को खंगालकर वास्तविकता की पहचान करा दी है। यह रचना कई पीढियों एवं अमर्याद भू भाग की जीवनगत विशेषताओं तथा समस्या का लेखा-जोखा है।

साम्प्रदायिकता हमारे इतिहास एवं वर्तमान जीवन की त्रासदी है। देश के स्वतंत्रता के पचास वर्ष बाद भी भारत के नागरिक साम्प्रदायिकता को खत्म नहीं कर सके है। आज भी देश के भीतर साम्प्रदायिक ताकतोें की खतरनाक भूमिका चल रही है। आम जनता मानवीय दृष्टिकोण की अपेक्षा मंदिर,मस्जिद,गुरूव्दारे तक ही अपना ध्यान सीमित रखती है। जिससे भारत की एकता विभाजित होती जा रही है। धर्म के नाम पर लोग आपस में झगडते है। धर्म

आदमी के लिए आवश्यक तत्व है। धर्म के कारण ही आदमी का जीवन सुसंगत बनता है। मानव जीवन को उदात बना देता है। धर्म के कारण मानव में भक्ति का उदय होता है। धर्म दो प्रकार हा होता है। साधारण, विशेष धर्म वही है जो हिंदू ,मुसलमान,सिक्ख, ईसाई कहलाता है और विशेष धर्म,वही है जो मन,अवस्था,काल में रहता है।

धर्म का विशेष पक्ष ही सम्प्रदाय है। धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पथ की आवश्यकता होती है। धर्म आत्मा है तो शरीर सम्प्रदाय है और सभी शरीरों में एक ही आत्मा होती है। तो हमारा मुख्य धर्म है मानव धर्म और विभिन्न सम्प्रदाय उस आत्मा के पथ है रास्ते है जिससे मानव को आगे बढना है। अपने कार्यो को सफल करना है।

भारत में सभी सम्प्रदायों के लोग रहते है,जो सभी एक ही नस्ल के लोग है। नाक,नक्श सब के एक जैसे है। रक्त,भाषा,संस्कृति का मिलाप इसमे है। द्रविडी,आर्य,मंगोलियन आदि जातियों का संकर इसमें पाया जाता है। लेकिन ये सभी लोग आज अपना इतिहास भूल गये है। वे अविवेक से अनुदारता का परिचय देते है। जिसकी वजह से उनमें संघर्ष होता रहता है। परस्पर घृणा,व्देष,स्वार्थ, अहंकार से ग्रस्त बने हुए है।

हिंदू धर्म के लोग मानसिक धरातल पर उदार होते है, किंतु आचरण के धरातल पर वे मनुष्य-मनुष्य में भयानक भेद मानते है। वे मुसलमानों को तुच्छ समझते है। आचरण के सतर पर वे संकीर्ण वृत्ति के लोग है। इसके विपरीत मुसलमानो में ईमान एवं उदारता होती है किंतु उन्हे कटटरवादी सिध्द करने की कोशिश में लोग रहते है। परिणामस्वरूप इनमें तनाव,अलगाव,मजहबी,अंधता,प्रांतीयता,भेदनीति,साम्प्रदायिकता की प्रवृति बढती गयी ।इन सभी तत्वों के कारण राष्टीय शांति नष्ट हुई। राष्ट्र अंदर ही अंदर टूटता गया। मनुष्य मै में सीमित हो गया। मै मुसलमान,मै श्रेष्ठ, मै हिंदू, मै श्रेष्ठ, मै सिक्ख, मै श्रेष्ठ यह भावना पनपने लगी। मानव धर्म नष्ट हो गया।

तमस और कितने पाकिस्तान दोनों उपन्यासों का समग्रता से परिचय कराना,इस शोधकार्य का उद्येश्य है। इन दोनों उपन्यासों व्दारा बताया गया है कि हमें धार्मिकता को त्याग कर मानवता की स्थापना करनी चाहिए। परस्पर वैर भाव के परिणाम कितने भयावह होते है, इसमें गरीब,आम जनता को जो भुगतना पडता है,जिससे मानव एवं राष्ट की ही हत्या होती है। इसका यथार्थ चित्रण दोंनो उपन्यासकारों ने यथार्थ रूप में किया है।

अनुसंधान का उद्येश्य:

1. दोंनों उपन्यासों में साम्प्रदायिक भेदभाव कों चित्रित किया है।

2. अंग्रेजों की कुटिल नीति और भारतीयों की भावात्मक एकता की कमियों की ओर संकेत कर सजग बनना भारतीयों के लिए कितना आवश्यक है, यह बताया है।

3. दोनों उपन्यासों में राजनीति के दोगलेपन को उजागर किया है।

4. धर्मांध लोग धर्म के नाम पर आग-जन्य वक्तव्य कर समाज को गुमराह कर उसे दंगे में ढकेल देते है।

5. अफवाहों के कारण दंगे आग की तरह जोर से भडक जाते है।

6. सांप्रदायिकता अंग्रेजों का विष रोपण है। इसने केवल देश का ही विभाजन नही किया बल्कि हमेशा -हमेशा के लिए हिंदू मुस्लिम समाज में व्देष फैला दिया।

7. दोनों उपन्यासों का परिवेश भले ही स्वाधीनता युगीन हो परंतु उसमें चित्रित समस्याएॅ प्रासंगिक है। आज भी साम्प्रदायिकता अपनी जडें मजबूत बना रही है।

8. सांप्रदायिकता के इस वातावरण में भी कुछ चरित्र सदभाव बनाए रखने का काम करते है। यह एक प्रकार से अंधेरे में रोशनी की किरणें है, जिन्हे तलाशकर मजबूत बनाने की जरूरत है।

9. दोनों उपन्यास साम्प्रदायिकता पर आधारित बेजोड कृतिया है। इसमें व्यक्त भविष्यवाणी खरी उतरी है। आज भी दंगों में कोई कमी नही आयी।

10. धार्मिक कटरता के कारण एक धर्म के व्यक्ति को दूसरे धर्म का जबरन धर्मांतरन कराने से धर्मो मंे व्देष फैलता है। इस घृणा,व्देष से अंत में कुछ भी नहीे मिलता,इसलिए ऐसे तत्वों से दूर रहने का संदेश इन उपन्यासों में मिलता है।

11. भारत की संस्कृति केवल एक ही जाति की देन नही है तो उसमें अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है।

12. धर्म का अर्थ व्यक्ति या समाज के कर्तव्य से है।

13. दोंनों उपन्यासों में विभाजन के मूल कारणों को स्पष्ट करने प्रयास किया है।

14. दोनों उपन्यासों का उद्येश्य है हमारा मुख्य धर्म हिंदू या मुसलमान न होकर मानवधर्म है।

15. साम्प्रदायिक भेदभाव निरर्थक है। जिसके कारण देश की हानि ही होती है।

16. अपना ही धर्म श्रेष्ठ मानने की लोगों की मानसिकता के कारण साम्प्रदायिकता फैलती है।

17. अंग्रेजों ने राजकीय सत्ता हथियाने के लिए कांग्रेस और मुस्लिम लीग का निर्माण किया।

18. हिंदु-मुस्लिम संबंध

19. अलगाववादी वृति का संबंध राजनितिक स्वार्थ से है।

20. अलगाववाद एक वृति है,उसका संबंध धर्म से नहीं है।

21. ऐतिहासिक सत्य और लोग में प्रचलित मत।

22. विभाजन की घटना से साम्प्रदायिता का फैलाव हुआ है।

23. साम्प्रदायिकता में किसी एक मजहब को दोषी नहीं माना जा सकता।

24. हिंदू-मुस्लिम दोंनों धर्मो में समन्ववादी वृति के लोेग समन्वय की कोशिस करते है।

25. दोनों उपन्यासों मेें घटनाओं को ध्यान मंे रखकर साम्प्रदायिकता का विश्लेषण किया है।

26. स्वतंत्र भारत में बहुसंख्यक हिंदू क्षेत्रमें मुस्लिमों पर और बहुसंख्यक मुस्लिम क्षेत्र में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्याचार हुए है।

27. कमलेश्वर ने बाबरी मस्जिद निर्माण की जड की ओर संकेत किया है।

इन सभी निष्कर्षो के आधार पर कह सकते है कि तमस और कितने पाकिस्तान दोंनो उपन्यास सर्वश्रेष्ठ है। जिसमें भूतकालीन घटनाएॅ है लेकिन वर्तमान युगीन बोध को स्पष्ट करने की क्षमता दोनों रचनाओं में है। यह दोनों रचनाएॅ उज्वल भविष्य की मांग करती है।

अनुसंधान की पध्दतियाॅ:

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस लिए इसे छोटे छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करना पडता है। शोधकार्य की व्यापकता को देख कर निम्न प्रकार की अध्ययन पध्दतियों का सहारा लिया जाएगा।

अध्ययन और निष्कर्ष पध्दती, सर्वेक्षण पध्दती,प्रयोगात्मक पध्दती,पूर्व अनुसंधान पध्दती,साक्षात्कार तथा प्रश्नावली आदि।

अनुसंधान कार्य:

प्रत्येक शोध विषय की अपनी एक सीमा होती है। इस शोध विषय को सूचारू रूप से और सुनियोजित रूप से बनाने के लिए छः अध्यायों में विभाजित किया है। ‘

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन’ इस विषय का विवेचन किया है।

पहला अध्याय: तुलनात्मक अध्ययन: अवधारणा, स्वरूप

1.1 तुलनात्मक अध्ययन की अवधारणा

1.2 तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप

1.3 तुलनात्मक अध्ययन की विशेषताएॅ

दूसरा अध्याय: तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास के कथानक की तुलना

2.1 तमस उपन्यास का कथानक

2.2 कितने पाकिस्तान उपन्यास का कथानक

2.3 दोनों उपन्यासों के कथानक की तुलना

तीसरा अध्याय: तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास में साम्प्रदायिकता

3.1 तमस उपन्यास में साम्प्रदायिकता

3.2 कितने पाकिस्तान उपन्यास में साम्प्रदायिकता

3.3 दोनांे उपन्यासों में साम्प्रदायिकता की तुलना

अध्याय चैथा: तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास में राजनीतिक प्रभाव

4.1 तमस उपन्यास पर राजनीतिक प्रभाव

4.2 कितने पाकिस्तान उपन्यास पर राजनीतिक प्रभाव

अध्याय पाॅचवा: तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास में देशविभाजन की त्रासदी

5.1 तमस उपन्यास में देशविभाजन की त्रासदी

5.2 कितने पाकिस्तान उपन्यास देशविभाजन की त्रासदी

5.3 दोनों उपन्यासों मंे देशविभाजन की त्रासदी की तुलना

अध्याय छटा: तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

6.1 तमस उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन

6.2 कितने पाकिस्तान उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन

निष्कर्ष:

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मूल ग्रंथ
2. सहायक संदर्भ ग्रंथ
3. पत्र- पत्रिकाएॅ
4. शब्दकोश

संदर्भ ग्रंथ-

मूल ग्रंथः

1. भीष्म साहनी,तमस,राजकमल प्रकाशन,प्रा. लि. नई दिल्ली,

2. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान,

सहायक ग्रंथ-

1.सूर्यनारायण रणसुभे,देश विभाजन और हिंदी कथा साहित्य,संचयन प्रकाशन,कानपुर

2.दिलीप फोलाने,तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी,विकास प्रकाशन,कानपुर

3.डाॅ. के.पी.जया,कथाकार कमलेश्वर,जवाहर पुस्तकालय,मथुरा,सं. 2007

4.गायत्री कमलेश्वर,कमलेश्वर मेरे हमसफर,राजपाल एंड संस,2005

5.डाॅ. सुरेशकुमार जैन,उत्तरशती का हिंदी साहित्य,अनपुर्णा प्र. नागपुर,2005

6.तुला राणा, दसवे दशक के हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक सौहार्द,वाणाी प्र. दिल्ली,2008

अनुसंधान की उपयोगिता:

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय की उपयोगिता इस अर्थ में है कि भारत में आज जो साम्प्रदायिक भेदभाव चल रहा है, वह समाप्त हो जाए। विविधता से संपन्न इस देश में सभी धर्म के लोगों में आपस में भाईचारा बना रहे। धर्म, मजहब से बढकर मानवीय धर्म है,इस बात को समझाा जाए। हम पहले भारतीय है और बाद में हिंदू, मुसलमान,सिक्ख है। दोंनों उपन्यासों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है

कि,विभाजन की त्रासदी से आम आदमी को ही अधिक परेशानी हुई है। राजनितिक बटवारा भले ही जमीन का हुआ हो, परंतु इन्सान के दिलों में भाईचारा बना रहना चाहिए। आज के युग में युध्द से किसी का भी भला नहीं होता। हर समस्या को हमें शांति से ही सुलझाना पडेगा। दोनों उपन्यासों में समानता के तत्व अधिक पाए जातें है।

अध्ययन की नई दिशाएॅं:

तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय को लेकर निम्न प्रकार से स्वतंत्र अध्ययन हो सकता है।

1. दोनों उपन्यासों का राजनितिक तुलनात्मक अध्ययन
2. दोनों उपन्यासों की सामाजिक पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन
3. दोनों उपन्यासों की धार्मिक पृष्ठभूमि की तुलना
4. दोनों उपन्यासों का भाषागत तुलना का अध्ययन
5. दोनों उपन्यासों मंे व्यक्त समस्याओं की तुलना
6. तमस उपन्यास में युगबोध का चित्रण
7. तमस उपन्यास में साम्प्रदायिकता
8. कितने पाकिस्तान उपन्यास में साम्प्रदायिकता
9. देशविभाजन और हिंदी उपन्यास
10. विभाजन की घटना से संबधित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
11. राम मंदिर-बाबरी मस्जिद विवाद की साम्प्रदायिकता को लेकर लिखे गए उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
12. साम्प्रदायिक समस्या पर आधारित लिखे गए उपन्यासों के हिंदू-मुस्लिम समन्वयवादी चरित्रःएक अध्ययन

उपर्युक्त विषय पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन हो सकता है। मेरे शोध कार्य की सीमा को ध्यान में रखकर मैने विषय चुना है- तमस और कितने पाकिस्तान उपन्यास का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष:

- तुलनात्मक अध्ययन का स्वरूप समझना।
- तुलनात्मक अध्ययन का महत्व समझना।
- दोनों उपन्यासों के कथानक की तुलना करना।
- दोनों उपन्यासों मंे साम्प्रदायिकता की तुलना करना।
- दोनों उपन्यासों में देशविभाजन की त्रासदी से लोग प्रभावित हुए है। आज भी इस पीडा से लोगों का जीवन प्रभावित हुआ है
- दोनों उपन्यासों की भाषा, शिल्प की तुलना करना।
- दोनों उपन्यासों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना।
- विभाजन के दर्द पर उपाय ढूँढना।
- भारत पाकिस्तान में भाईचारा बनाए रखने के लिए प्रयास करना।
- हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्म के लोगों को समन्वय की शिक्षा देना जरूरी है
- दांेनों में धर्मनिरपेक्षता की भावना बढाना जरूरी है।
- त्यौहारों,उत्सवों में दोनों समुदायों को एकत्रित आना आवश्यक है।
- साम्प्रदायिकता का विरोध करना होगा।
- मिश्र बस्तियाॅं बनाना आवश्यक है।
- शासन स्तर पर ठोस उपायों की आवश्यकता है।
- साम्प्रदायिकता के खिलाफ एवं राष्टीयता के हक मंे युवा जनजागृती आवश्यक है।
- मानवतावाद का प्रचार-प्रसार हो।

शोधार्थी, मार्गदर्शक,

खुरेशी लायकपाशा महेबूबसाब प्रो.डाॅ. बी.एस. भुक्तरे

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,

महाराष्ट्[a] [a] उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर.